जलवायु का निर्माण करते है। ऐसे तो समय-समय होता है, जो समय आने पर सब कुछ करता है पर समय ऊर्जा प्रकाश को रोकने में जीव पदार्थ का विशेष योगदान होता है। जीव पदार्थ प्रकाश पड़ने के कारण रसायनिक परिवर्तन से अपनी गुणात्मक ऊर्जा छोड़ते रहते है जो जीव निर्माण और विकास के लिए जलवायु बनाने का कार्य करते है। जब जलवायु तैयार हो जाती है तब इनके गुणों की ऊर्जा हवा बनकर जीव प्रकाश को रोकती है। जिसके बाद आत्मिक रचना का निर्माण होता है। यही आत्मिक रचना बीज रूप धारण करती है। जो प्राकृतिक विकास से जीवन धारण करती है। जीवन समय रूपी प्रकाश से क्रमिक विकास करते हुए अपने विषय को पूरा करता है। यही समय है जो समय तो लगाता है पर समय आने पर हर जो विषय को पूरा करता है। मानव के अतरिक्त अन्य जीव पदार्थ एक निश्चित गुण विकास के लिए पैदा होते है जो उसी गुण को छोड़ते रहते है, इनका विषय बदलता नही है, इनके द्वारा छोड़ी गयी 'शरीर' 'पदार्थ' में परिवर्तित होकर उसी गुण की ऊर्जा छोड़कर समय बनाने में सहयोग कहती रहती है, जो जलवायु बनाकर निर्माण का समय लाने की क्रिया निरन्तर करती रहती है। हर क्रिया समय आने पर होती है। समय सदैव आता है कभी जाता नहीं है, निर्माण की क्रिया का समय बनाने में हर जीव पदार्थ का योगदान होता है। इस लिए मानव को इनकी रक्षा करनी चाहिए, इसे नुकसान नही पहुँचाना चाहिए। समय हर जीव का निर्माण करता है उसका गुणात्मक विकास कर विषय पूर्ति के बाद स्थायी पदार्थ में परिवर्तित कर देता है। सृष्टि निर्माण का यही सिलसिला समय निरन्तर चलाता रहता है। जिससे पृथ्वी का ही नही बल्कि पूरे बह्माण्ड का विस्तार होता है। इसी क्रिया से अन्य ग्रहो पर जहां अभी जीवन नही है वहा भी जीवन निर्माण की जलवायु बनाने का कार्य समय कर रहा है। समय निरन्तर चलता रहता है जिससे जगत में रसायनिक परिवर्तन होता रहता है। यही परिवर्तन उत्पत्ति की जलवायु तैयार करते है, पर प्रकाश को रोककर विकास क्रिया जीव पदार्थ करते है।

प्रकृति में सभी जीव समय के अनुसार ही चलते रहते है पर मानव ही समय को अपनी इच्छानुसार आगे पीछे करने का प्रयास करता रहता है। जबकि समय से पूर्व की क्रिया का जीवन ज्यादा दिन नही चल पाता है। समय जब उसके सर्वाइव करने की जलवायु बना लेता है तो खुद उसका समय बन जाता है। मानव समय नहीं बना सकता है पर समय लाने की जलवायु अपनी इच्छा शक्ति से बना सकता है। उसके लिए विषय की इच्छा पैदा करने के बाद उसके प्रति सकारात्मक भाव अधिक से अधिक छोड़ना चाहिए, उसका यही भाव प्रकृति में विषय पूर्ति के लिए जलवायु बनाने का कार्य करने लगता है, जलवायु बनने के बाद उसका समय आ जाता है। इसी क्रिया से मानव समय को जल्दी ला सकता है। यह क्रिया आकर्षण रूपी चुम्बकत्व से होती है, जो भाव निकलता है वह जहॉ से उसके विषय की पूर्ति होती है वही जाता है और उसके अन्दर रासायनिक क्रिया करके अपने विषय की पूर्ति का भाव बनाने लगता है। जब दोनो पक्ष का गुणात्मक मन समान हो जाता है तब उस विषय की उत्पत्ति हो जाती है, वही उसका समय होता है। इसलिए जल्दबाजी करने से नही बल्कि सकारात्मक भाव छोड़ने से समय जल्दी आता है। इस क्रिया से मानव अपने विषय की पूर्ति का समय जल्दी ला सकता है। विषय के प्रति नकारात्मक सोच अप्रकृति होती है। जो विषय पूर्ति के समय को दूर करती है और सकारात्मक सोच समय को नजदीक लाती है। इस प्रकार मानव अपनी इच्छा पूर्ति के समय को जल्दी ला सकता है।

पाठकनामा

पत्रिका समसामयिक विषयों से ओत-प्रोत है। ज्ञानवर्द्धन करती है। अच्छी लगी। चित्रण मनोहरी लगे। सम्पादकीय लेख अत्यन्त सूक्ष्य वैज्ञानिक तथ्यों से परिपूर्ण है।

रविप्रकाश श्रीवास्तव,
एडवोकेटए इब्राहिमाबाद बाराबंकी।

अपने विचार व लेख हमें निम्नलिखित पते पर भेजें–
18/A, ब्रह्मपुरी,निकट जुगौली क्रासिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ